यह तो ध्रुव सत्य है कि व्यक्ति का पूर्वजन्म होता है और अपने एक जन्म में किए गए श्रेष्ठ-नेष्ठ कार्यों का भार उसे अगले जन्म में ले जाना ही होता है। कई बार मैं जब पीड़ा से युक्त व्यक्तियों को देखता हूं अथवा ऐसे व्यक्तियों को देखता हूं जो जीवन में प्रयत्न करने पर भी सफल नहीं होते हैं, तो उसके कारण पूर्वजन्म कृत दोष ही प्रतीत होते है। जो आज किया उसका फल कल भुगतना ही है, ठीक उसी प्रकार पूर्वजन्म में किए गए दोषों का परिणाम इस जन्म में प्राप्त होता है। उसी प्रकार पूर्व में किए गए श्रेष्ठ कार्यों का सौभाग्य फल भी इस जीवन में प्राप्त होता है। ऐसा भी नहीं है कि आपने पूर्व जन्म में केवल दोष युक्त कार्य ही किए हैं लेकिन यदि इस जीवन में बार-बार बाधाएं आ रही हैं तो निश्चय ही इसका स्रोत पूर्वजन्म में ही है, जिसकी आपको जानकारी नहीं है। उन पूर्वजन्म कृत दोषों का शमन व्यक्ति स्वयं कर सकता है यदि उसके पास श्रेष्ठ गुरु हैं, ज्ञान है और साधना क्षमता है। आप में तो ये तीनों गुण विद्यमान हैं अतः होली की रात्रि में अवश्य सम्पन्न करें पूर्वजन्म कृत पाप शमन फेत्कारिणी साधना -

यह प्रयोग होली दहन की रात्रि को करें। स्नान आदि नित्य क्रिया से निवृत्त होकर पीला वस्त्र पहनें तथा पीले आसन पर दक्षिण दिशा की ओर बैठें। सर्वप्रथम दोनों हाथ जोड़कर भगवान गणपति का स्मरण करें तथा जोर से बोलकर अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए, पारिवारिक सुख के लिए निवेदन करें। इसके पश्चात् गुरु पूजन करके दो माला गुरु मंत्र का जप करें।

गणेश पूजन कुंकुम, पुष्प, अगरबत्ती, दीपक व प्रसाद आदि से करें, फिर अपने सामने साफ तांबे की प्लेट में फेत्कारिणी यंत्र को स्थापित करें। इस पर सिन्दूर की 7 बिन्दियां दाहिने हाथ की अनामिका से लगावें और फिर इसका पूजन उक्त सामग्री एवं पुष्प से करें। इसके पश्चात् दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प बोलें कि 'मैं (अपना नाम) यह प्रयोग गणपति, गुरु को साक्षी रख अपने समस्त दोष निवारण के लिए कर रहा हूं, वे दोष समाप्त हो जाएं और मेरी पुनः उन्नति आरम्भ हो।' यह कहकर जल को भूमि पर छोड़ दें। मूंगा माला से निम्नलिखित मंत्र की 11 माला जप करें।

मंत्र

।।ॐ क्लीं मम समस्त पूर्व दोषान् निवारणाय क्लीं फट् स्वाहा।।

मंत्र जप पूर्ण हो जाने पर फेत्कारिणी यंत्र को घर के सभी सदस्यों पर सात बार घुमा दें। उसके पश्चात् एक काले कपड़े में बांधकर किसी सूनसान स्थान पर डाल दें तथा पीछे मुड़कर नहीं देखें।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 450/-

होली की रात्रि को ही आपके घर में जो कुछ पुरानी प्रयोग की हुई साधना सामग्री है, जिस पर आप साधना-पूजन कर चुके हैं, वह साधना सामग्री एक लाल कपड़े में कुछ तिल और सरसों के साथ मिला दें, अब इस पर गांठ लगा दें और यह सभी सामग्री होलिका अग्नि में समर्पित कर दें।